بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

﴿ وَلَا تَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ۪ ﴾

"गुनाह और ज़ुल्म व ज़्यादती के कामों में मदद न करो।" [सूरह मायदा:2]

मुहर्रमुल हराम

और

मौजूदा मुसलमान

मुरत्तिब व हिन्दी तर्जुमा

मुहम्मद उमेर टोंकी

नज़रे सानी

शैख़ रज़ाउल्लाह अ़ब्दुल करीम मदनी

(फ़ाज़िल जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरह)

इदारा दअ़वतुल इस्लाह

बड़ी मस्जिद के पास, जमालपुर चौक, अलीगढ़

Mob: 8476077702

e-mail: idialig@gmail.com

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन, वस्सलातु

वस्सलामु अ़ला रसूलिहिल अमीन अम्मा-बअ़द!

मुहर्रम हिजरी साल का पेहला महीना है, जिसकी बुनियाद तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम के वाक़िआ ए हिजरत पर है, लेकिन इस इस्लामी साल का तक़र्रुर (नियुक्ति) और इस्तेमाल की शुरूआत 17 हिजरी में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माना ए ख़िलाफ़त से हुई। [फ़तहुल बारी, जिल्द (Vol.) 7, पेज न०:334]

मुहर्रमुल हराम उन चार महीनों में से एक है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने हुरमत (यानी बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व एहतराम) वाला महीना क़रार दिया है, जैसा कि क़ुरआन में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ عِنۡدَ اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ

"महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक, किताबुल्लाह में बारह है, उसी दिन से जबसे आसमान व ज़मीन को उसने पैदा किया है, उनमें से चार महीने हुरमत व अदब के हैं।" [सूरह तौबा, आयत न०:36]

इसकी वज़ाहत करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने फ़रमाया:"हुरमत वाले महीने चार हैं ज़ी क़अ़दह, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम और रजब।" [सहीह बुख़ारी, हदीस न०:4662]

वैसे तो साल के बारह महीनें इज़्ज़त व एहतराम और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने के हैं, लेकिन इन चार महीनों में ख़ास तौर पर गुनाह, लड़ाई, झगड़ा, ज़ुल्म और ज़्यादती करना सख़्ती से मना है।

मुहर्रम के महीने में हमारे लिये नफ़्ली रोज़ों की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत है। [सहीह मुस्लिम, हदीस न०:1163]

मुहर्रम की दस तारीख़ के रोज़े की मशरूइय्यात (दीनी हैसियत) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने के बाद हुई।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम जब मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो देखा कि यहूद आ़शूरह (मुहर्रम की दस तारीख़) का रोज़ा रखते हैं, उनसे इसकी वजह पूछी गई तो उन्होंने बताया कि यह एक अच्छा दिन है। इसी दिन अल्लाह ने बनी इस्राईल को उनके दुश्मन

(यानी फ़िरऔन) से निजात दिलाई थी, इसीलिये मूसा अ़लयहिस्सलाम ने इस दिन का रोज़ा रखा था। तो आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हम मूसा (अ़लयहिस्सलाम) के तुम से ज़्यादा क़रीब हैं।" फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने इस दिन का रोज़ा रखा और लोगों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

[सहीह बुख़ारी:2004, सहीह मुस्लिम:1130, अबू दावूद:2444]

उम्मुल मौमिनीन (यानी तमाम मौमिन मुसलमानों की माँ) आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ब्यान करती हैं कि: "आ़शूरह (यानी दसवीं मुहर्रम) का दिन ऐसा था कि क़ुरेश के लोग इस्लाम से पेहले इसका रोज़ा रखा करते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम भी नबूवत से पहले यह रोज़ा रखते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने ख़ुद भी इस दिन रोज़ा रखा और मुसलमानों को भी इसका हुक्म दिया। फिर जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो वही फ़रीज़ा हो गया और आ़शूरे का रोज़ा छोड़ दिया गया, जो चाहता रख लेता और जो चाहता न रखता।" [अबू दावूद:2442, सहीह बुख़ारी:2002, सहीह मुस्लिम:1125]

लेकिन रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने के बाद भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम मुहर्रम की दस तारीख़ का रोज़ा रखते थे। [सहीह बुख़ारी:2006, सही मुस्लिम:1132]

माह ए मुहर्रम के रोज़ों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने फ़रमाया: "रमज़ान के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़े अल्लाह के महीने मुहर्रम के रोज़े हैं।" [सहीह मुस्लिम:1163, अबू दावूद:2429]

ख़ास तौर से मुहर्रम की दस तारीख़ के रोज़े की सहीह हदीस में यह फ़ज़ीलत आई है कि: "इस से एक साल गुज़िशता के (सग़ीरह यानी छोटे) गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं।" [सहीह मुस्लिम:1162]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम को जब पता चला कि यहूद व नसारा(यानी ईसाई) इस दिन का एहतराम करते हैं और इस दिन को ईद के तौर पर मनाते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने यहूद और नसारा की मुख़ालिफ़त में फ़रमाया: "इन्शा अल्लाह (यानी अल्लाह ने चाहा तो) जब अगला साल आएगा तो हम 9 तारीख़ का (भी) रोज़ा रखेंगे।" लेकिन अगला साल आने से पहले ही आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम दुनिया से रुख़सत हो गए।

[सहीह मुस्लिम:1134, अबू दावूद:2445]

इसलिये जब हम आ़शूरे का रोज़ा रखना चाहें तो मुहर्रम की 10 तारीख़ के साथ 9 तारीख़ का भी रोज़ा रखें। ऊपर लिखी गई सभी सहीह अहादीस की रोशनी में माह ए मुहर्रम में जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम से साबित होता है, वोह सिर्फ़ और सिर्फ़ रोज़े रखना है।

लेकिन अफ़सोस! आज अगर हमारे सामने मुहर्रम का ज़िक्र होता है, तो हमारे ज़हनों में फ़ौरन इस महीने की एक अलग ही तस्वीर उभरती है। इसमें हादसा ए करबला की याद शुरू हो जाती है, स्टेज सजने लगते हैं, और शियों व ख़ुराफ़ियों ही के हलक़े में नहीं बल्कि ख़ुराफ़ात से ख़ुद को दूर समझने वालों के हलक़े (गिरोह) में भी बड़ा ज़ोर-शोर पैदा हो जाता है, और भी ज़्यादा अफ़सोस की बात तो यह है कि बहुत से सुन्नी मौलवी भी अपनी महफ़िल व ब्यान में अ़वाम से वाह वाही हासिल करने के लिये फ़ज़ाइले मुहर्रम, हादसा ए करबला और शहीदे करबला के बारे में बे-सरोपा रिवायात को पूरे ज़ोर शोर और क़ुव्वत के साथ ब्यान करते नज़र आते हैं, वोह अपने ज़ोरे ब्यान में बे-बुनियाद रिवायतें ब्यान करने से भी नहीं चूकते, उनकी बला से रिवायतें बे-बुनियाद हों या सहावा ए किराम और बुज़ुरगाने दीन की तौहीन ही होती हो।

कुछ लोग समझते हैं कि यह महीना इसलिए क़ाबिले एहतराम है कि इसमें हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत का सानेहा पेश आया था। लेकिन यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि शहादत की यह घटना तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम के दुनिया ए फ़ानी से रुख़सत होने के पचास साल बाद पेश आई, जबकि दीने इस्लाम इमामुल अम्बिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही मुकम्मल (Complete) हो चुका था, जैसा कि अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन फ़रमाता है:

اَلۡيَوۡمَ اَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِيۡنَكُمۡ وَاَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِىۡ وَرَضِيۡتُ لَكُمُ الۡاِسۡلَامَ دِيۡنًا ؕ

"आज मैंने तुम्हारे लिये दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये बहैसियत दीन, इस्लाम को पसन्द किया।" [सूरह मायदा, आयत न०:3]

इसलिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम के बाद दीन में

किसी भी तरह की कमी या इज़ाफ़ा नाजाइज़ व हराम है।

हालांकि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत मुसलमानों की तारीख़ का एक दर्दनाक वाक़िआ़ है। आपकी ख़ूबियों और फ़ज़ीलतों भी हमें तस्लीम हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने फ़रमाया था: "हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) नौजवान जन्नतियों के सरदार हैं।"

[तिर्मिज़ी:3768, सहीह]

लेकिन इसका हरगिज़ यह मतलब नहीं कि हम हज़रत हुसैन रज़ि० की शहादत की वजह से मुहर्रम के महीने को मनहूस, हुज़्न व मातम और ग़म व अलम का महीना क़रार दें। आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम के चचा हमज़ह रज़ि० को शहीद किया गया, लाश का मुस्ला तक कर दिया गया यानी नाक, कान काटके चेहरे को बिगाड़ा भी गया, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने कभी भी उनकी शहादत का मातम नहीं मनाया।

इसी महीने में हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बढ़कर एक और सानेहा ए शहादत और वाक़िआ ए अ़ज़ीम पेश आया था यानी मुहर्रम की पेहली तारीख़ को हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत का वाक़िआ़, और इससे भी दर्दनाक शहादत दामादे रसूल उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत जो 18 ज़िलहिज्जा को हुई। अगर इन शहादतों की वजह से इस्लाम में मातम मनाने, सबीलें लगाने और खिचड़े पकाने की इजाज़त होती तो बक़ीनन तारीख़े इस्लाम की यह दोनों शहादतें ऐसी हैं कि मुसलमान इन पर जितनी भी सीना कोबी और मातम करते वोह कम होता। लेकिन एक तो इस्लाम में इसकी इजाज़त नहीं, दूसरे यह कि यह सारे वाक़िआ़त दीन मुकम्मल होने के बाद पेश आए हैं। इसलिये उनकी याद में मजालिसे अ़ज़ा (यानी ताज़ियत की मजलिसें) और मातम के मेले और मेहफ़िलें क़ायम करना दीन में बन्दों की तरफ़ से इज़ाफ़ा है, जिसकी इजाज़त दीने इस्लाम बिल्कुल भी नहीं देता।

इसी तरह हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सोग में मुहर्रम के महीने में शादी नहीं की जाती, जबकि यह ग़लत रस्म है जो कि कुछ मुसलमानों के यहां चल निकली है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम रबिउल अव्वल में फ़ौत हुए, उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु

ज़िलहिज्जा को और अ़ली अल मुरतज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु 19 रमज़ानुल मुबारक को शहीद हुए। इनके अ़लावा और भी बहुत से अस्हाबे रसूल मुहर्रम के अ़लावा दूसरे महीनों में शहीद हुए, फिर जिन महीनों में यह शहीद हुए हैं उनमें शादियाँ क्यों की जाती हैं?

"इमाम" और "अ़लयहिस्सलाम": इसी तरह अहले सुन्नत की अकसरियत हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बिना सोचे समझे "इमाम हुसैन अ़लयहिस्सलाम" बोलती है, जबकि सय्यिदना हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ "इमाम" का लफ़्ज़ बोलना और इसी तरह "रज़ियल्लाहु अ़न्हु" के बजाए "अ़लयहिस्सलाम" कहना भी शियाओं की ही पैरवी है। हम तमाम सहाबा ए किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ इज़्ज़त व एहतराम के लिये "हज़रत" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उ़मर, हज़रत उ़स्मान, हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैराह। हम कभी "इमाम अबू बक्र सिद्दीक़, इमाम उ़मर" नहीं बोलते। इसी तरह हम सहाबा ए किराम के नाम के बाद "रज़ियल्लाहु अ़न्हु" लिखते और बोलते हैं। और कभी "अबू बक्र सिद्दीक़ अ़लयहिस्सलाम या हज़रत उमर अ़लयहिस्सलाम" भी नहीं बोलते, लेकिन हज़रत हुसैन रज़ि० के साथ "रज़ियल्लाहु अ़न्हु" के बजाए "अ़लयहिस्सलाम" बोलते हैं। कभी इस पर भी ग़ौर किया है कि ऐसा क्यूँ है?

दरअसल यह शियाओं का वोह असर है जो अनजाने में हमारे अन्दर दाख़िल हो गया है। इसलिये याद रखिये कि क्योंकि शीओं का एक बुनियादी मस्अ़ला "इमामत" का भी है और इमाम उनके नज़दीक अम्बिया की तरह अल्लाह की तरफ़ से नामज़द और मआ़सूम होता है। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी उनके बारह इमामों में से एक इमाम हैं, इसलिये वोह उनके लिये "इमाम" का लफ़्ज़ बोलते हैं और इसी तरह उनके लिए "अ़लयहिस्सलाम" लिखते और बोलते हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि वोह एक सहाबी ए रसूल हैं "इमामे मआ़सूम" नहीं और ना ही हम शीओं की इमामते मआ़सूमा के क़ायल हैं। इसलिये हमें उनहें भी दूसरे सहाबा ए किराम की तरह "हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु" लिखना और बोलना चाहिये। "इमाम हुसैन अ़लयहिस्सलाम" नहीं। क्योंकि यह अल्फ़ाज़ शीओं के मअ़लूम अ़क़ाइद और मख़सूस तकनीक के ग़म्माज़ हैं। (यानी मशहूर व जाने माने अ़क़ाइद और ख़ास मक़सद की तरफ़ इशारा करते हैं।) [रसूलात ए मुहर्रमुल हराम और सानेहा

करबला, अज़ मुफ़स्सिरे क़ुरआन हाफ़िज़ सलाहउद्दीन यूसुफ़, पेज न०:30]

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत की आड़ में शैतान ने दो बिदअ़तें पैदा कर दीं: एक बिदअ़त हुब्बे हुसैन (यानी राफ़ज़ियों) के ज़रिये जिन्होंने इस दिन को योमे मातम (मातम का दिन) बना लिया। दूसरी बिदअ़त दुश्मनाने अ़ली व हुसैन (यानी ख़ारजियों) के ज़रिये जिन्होंने इस दिन के लिये ख़ुशी के बहुत से अ़मल घड़ लिये, इस तरह इन दोनो गिरोहों ने मातम और ख़ुशी मनाने के लिये हदीसें तक घड़ डालीं।

योमे आ़शूरह (मुहर्रम की दसवीं तारीख़) को एक गिरोह ने मुहब्बते हुसैन के नाम पे जिन बिदआ़त को ईजाद किया उनमें से कुछ यह हैं: मातम की महफ़िलें क़ायम करना, ग़म मनाना, प्यासे रहना, रोना-पीटना, नोहा ख़्वानी करना, गिरेबान फाड़ना, ताज़िये निकालना, खेल कूद (पट्टे बाज़ी) करना, गोश्त न खाना, इन दस दिनों में बनाव सिंघार न करना, मेहन्दी न लगाना, दस मुहर्रम को कारोबार बन्द करना और मुहर्रम के महीने में शादियां न करना।

इसके मुक़ाबले में दूसरे गिरोह ने जिन बिदआ़त को ईजाद किया उनमें से कुछ यह हैं: इस दिन ख़ुशी का इज़हार करना, ग़ुस्ल करना, सुरमा लगाना, हलीम पकाना, ख़ास नमाज़ें पढ़ना, आ़म आदत के ख़िलाफ़ खाने बनाना, पानी की सबीलें लगाना, इस दिन साल भर की ज़रूरतों में कुशादगी (इज़ाफ़ा) करना और इसी अन्दाज़ की और भी बहुत सी चीज़ें इस दूसरे गिरोह ने पेहले गिरोह के मुक़ाबले में ईजाद कीं। इस तरह यह दोनों गिरोह दीन में ग़ुलू (यानी हद से आगे बढ़ जाने) के शिकार हुए।

जबकि हक़ीक़त में यह सारी चीज़ें बिदअ़त हैं। और मुसलमानों को भी होश नहीं आता कि यह सब बिदआ़त करके आख़िर वोह किसकी पैरवी कर रहे हैं, क़ुरआन व सुन्नत में तो इनका ज़िक्र नहीं है, न हमारे रहनुमा व पेशवा नबी ए बरहक़ इमामे आज़म मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने रोज़ों के अ़लावा इस दिन या इस महीने के तअ़ल्लुक़ से कुछ किया है न फ़रमाया है, न सहाबा, न ताबईन, न तबअ़ ताबईन ने ही यह सब ख़ुराफ़ात किये हैं। और अइम्मा ए मुस्लिमीन से भी इसका सबूत नहीं मिलता।

मुहर्रम में की जाने वाली इन ख़ुदसाख़्ता (अपनी तरफ़ से घड़ी हुई) रस्मों के बारे में उ़लमा के फ़तवे भी पढ़ लीजिये:

अहनाफ़ के बरेलवी मस्लक के मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब के फ़तवे:

सवाल: ताज़िया बनाना और उस पर नज़र व नियाज़ करना, अ़राइज़ व उम्मीदे हाजत बर आरी लटकाना (यानी अपनी हाजत पूरी होने की उम्मीद से अ़रज़ियां लटकाना) और ब नियते बिदअ़ते हस्ना इसको दाख़िले हस्नात जानना कैसा है?

जवाब: अफ़्आले मज़कूरह (ऊपर लिखे तमाम काम) जिस तरह अ़वामे ज़माना में राइज हैं बिदअ़ते सय्या व ममनूअ़ व नाजाइज़ हैं।

[तअ़ज़िया दारी, पेज न०:15]

इसी तरह मुहर्रम की दूसरी बिदअ़त मरसिया ख़्वानी के बारे में एक सवाल का जवाब देते हैं:

सवाल: मुहर्रम शरीफ़ में मरसिया ख़्वानी में शिरकत जाइज़ है या नहीं?

जवाब: नाजाइज़ है, वोह मनाही व मुनकिरात से पुर (भरे) होते हैं।

[इरफ़ाने शरीअ़त, पेहला हिस्सा, पेज न०:16]

सवाल: (1) बाज़ अहले सुन्नत जमाअ़त अ़शरा ए मुहर्रम में न तो दिन भर रोटी पकाते हैं और न झाड़ू देते हैं, कहते हैं बाद दफ़न रोटी पकाई जाएगी, (2) इन दस दिन में कपड़े नहीं उतारते, (3) मुहर्रम के महीने में कोई शादी ब्याह नहीं करते?

अलजवाब: तीनों बातें सोग हैं और सोग (यानी मातम) हराम है।

[अहकामे शरीअ़त, पेहला हिस्सा, पेज न०:71]

अहनाफ़ के देवबन्दी उ़लमा के फ़तवे भी मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

मस्अ़ला: मुहर्रम के महीने को मातम और सोग का महीना क़रार देना जाइज़ नहीं हराम है, और मुहर्रम के महीने में शादी वग़ैरह को ना मुबारक और ना जाइज़ समझना, सख़्त गुनाह और अहले सुन्नत के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है, इस्लाम ने जिन चीज़ों को हलाल और जाइज़ क़रार दिया हो एतक़ादन या अ़मलन उनको नाजाइज़ और हराम समझने में ईमान का ख़तरा है। [फ़तावा रहीमिया, जिल्द 2, पेज न०:191, व हवाला मसाइल शिर्क व बिदअ़त, पेज:214, मतबूआ़ मक्तबा रज़ी देवबन्द]

मस्अ़ला: दस मुहर्रम को ज़िक्रे शहादत का ब्यान करना, अगरचे (भले ही) ब रिवायात सहीह हो या सबील लगाकर शरबत पिलाना, या चन्दा सबीले शरबत में देना, या दूध पिलाना यह सब सहीह नहीं है

और रवाफ़िज़ से तशब्बो (मुशाबिहत) की वजह से हराम हैं।

[फ़तावा रशीदिया, पेज न०:139]

मस्अ़ला: शरीअ़त की तरफ़ से 10 मुहर्रम और 12 रबीउल अव्वल दोनों में कारोबार बन्द करने का हुक्म नहीं है। [फ़तावा महमूदिया, जिल्द 5, पेज न०:391, व हवाला मसाइल शिर्क व बिदअ़त, पेज न०:215]

क़ुरआन व हदीस और उ़लमा ए किराम के फ़तवों और तहरीरों की रौशनी में मुहर्रम की दस तारीख़ को रोज़ा रखने के अ़लावा जो काम आ़शूरा या शहादते हुसैन रज़ि० की निस्बत से किये जा रहे हैं ग़ैर इस्लामी हैं, उनमें से अक्सर चीज़ें बिदआ़त में से हैं और कुछ शिर्क में से हैं।

एक मनघड़त रिवायत: मुहर्रम की दसवीं तारीख़ के बारे में जो रिवायत ब्यान की जाती है कि: "जिसने अपने घर वालों पर आ़शूरह के दिन फ़राख़ दिली के साथ (यानी दिल खोल के) ख़र्च किया अल्लाह उस पर पूरे साल कुशादगी करेगा।"

यह रिवायत बिल्कुल बे असल और मौज़ू (मनघड़त) है। ज़्यादा मअ़लूमात के लिये देखिये: अल मौज़ूआ़त: जिल्द 2/पेज203—फ़तावा इब्ने तैमिया: 2/354—मिन्हाजुस्सुन्नह:2/248—इक़तिज़ा उस सिरातुल मुस्तक़ीम, पेज न०:301, मतबूआ़ मिस्र, 1950 ई०।

शैख़ नासिर उद्दीन अलबानी रहि म हुल्लाह अपनी तअ़लीक़े मिश्कात में फ़रमाते हैं:

"هو حديث ضعيف من جميع طرقه، وحكم عليه شيخ الاسلام ابن تيمية بالوضع فما ابعد، والشريعة لا تثبت بالتجربة."

"इस हदीस की तमाम सनदें ज़ईफ़ हैं, शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहि म हुल्लाह ने इसको मौज़ू (मनघड़त) क़रार दिया है, शरीअ़त के मसाइल किसी के ज़ाती तजुरबात से न साबित होते हैं और न हल।"

[मिश्कातुल मसाबीह मअ़ तअ़लीक़े अलबानी, जिल्द 1, पेज न०:1603]

नोट: मुहर्रम की दसवीं तारीख़ के बारे में जो क़िस्से ब्यान किये जाते हैं कि इस दिन आसमान से ख़ून बरसा था या पत्थरों के नीचे से ख़ून निकल रहा था, और इसी दिन सबसे पेहली बारिश हुई, इसी दिन अ़र्श, लोह व क़लम, आसमानों और ज़मीनों वग़ैराह को पैदा किया गया, इसी तरह इस दिन आदम अ०, इदरीस अ०, इब्राहीम अ०, याक़ूब अ०, यूनुस अ०, या और दूसरे अम्बिया अ़लयहिमुस्सलाम के

बारे में जितने भी क़िस्से ब्यान किये जाते हैं इनमें से किसी एक की भी सनद सहीह नहीं है बल्कि अक्सर तो बेबुनियाद और मौज़ू व मनघड़त हैं और बाज़ बहुत सख़्त ज़ईफ़ हैं। तफ़सील जानने के लिये ऊपर लिखे हवाले और मोहतरम शैख़ अ़ब्दुस्सलाम रहमानी की किताब "मुहर्रमुल हराम व मस्अ़ला हज़रत हुसैन व यज़ीद" का पढ़ना मुफ़ीद होगा।

उम्मुल मौमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ब्यान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम ने फ़रमाया:

﴿ مَنۡ اَحۡدَثَ فِىۡۤ اَمۡرِنَا هٰذَا مَا لَيۡسَ مِنۡهُ فَهُوَ رَدٌّ ﴾

"जिसने हमारे इस दीन में कोई नई चीज़ ईजाद की वोह मरदूद (रद्द) है।" [सहीह बुख़ारी, हदीस न०:2697, सहीह मुस्लिम:1718]

आख़िर में अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन से दुआ़ है कि हमें हर क़िस्म के शिर्क और बिदआ़त व ख़ुराफ़ात से बचाए और इमामे आज़म मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लयहि वसल्लम की मुकम्मल तौर पर इत्तिबाअ़ (पैरवी) करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और जिन भाइयों और बहनों ने हक़ बात को आ़म करने के लिये इस फ़ोल्डर की इशाअ़त में हमारे साथ जिस तरह भी तआ़वुन किया है उन्हें दुनिया और आख़िरत दोनो जहानों में इसका बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। आमीन या रब्बुल आ़-लमीन।

इसी तरह के दूसरे दीनी व इस्लाही फ़ोल्डर्स उर्दू और हिन्दी में आप **'इदारा दअ़वतुल इस्लाह'** से फ़्री सबीलिल्लाह (फ़्री) हासिल कर सकते हैं। इन्शा अल्लाह आइन्दा भी दीनी व इस्लाही फ़ोल्डर्स उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी वग़ैराह में छापने का इरादा है, अगर आप भी इस तरह के फ़ोल्डर्स दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं या इस तरह के फ़ोल्डर्स की नशरो इशाअ़त में हिस्सा लेना चाहते हैं तो हमसे राब्ता करें।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ